Toppersnotes®
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 4

पेपर 2 || सामाजिक विज्ञान

लोकप्रशासन, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र व शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	लोक प्रशासन, समाजशास्त्, अर्थशास्त्, दर्शनशास्त्र व शिक्षण विधियाँ	
1.	**लोक प्रशासन** ➢ एक विषय के रूप में लोक प्रशासन का अर्थ, दायरा, प्रकृति विकास ➢ संगठन के सिद्धान्त ➢ प्रशासनिक व्यवहार निर्णय लेना, नैतिक, प्रेरणा व संचार या सम्प्रेषण प्रक्रिया ➢ भारत में प्रशासनिक सुधार (प्रथम व द्वितीय प्रशासनिक सुधार के विशेष सन्दर्भ में) ➢ नागरिकों की शिकायतों का निवारण लोकपाल, लोकायुक्त और RTI	**1**
2.	**समाजशास्त्र** ➢ समाजशास्त्र - अर्थ, प्रकृति एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य ➢ मौलिक अवधारणाएँ - समाज, सामाजिक समूह, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक परिवर्तन ➢ जाति और वर्ग, अर्थ, विशेषताएँ, जाति और वर्ग में परिवर्तन ➢ वर्तमान सामाजिक समस्याएँ- जातिवाद, साम्प्रदायिकता, गरीबी, भ्रष्टाचार, एड्स ➢ वर्ण, आश्रम, धर्म, पुरुषार्थ, विवाह व परिवार की अवधारणा	**17**
3.	अर्थव्यवस्था का परिचय	**39**
4.	राष्ट्रीय आय	**41**
5.	मुद्रा और मुद्रास्फीति	**43**
6.	भारत में आर्थिक नियोजन	**48**
7.	भारत में बैंकिंग और मौद्रिक नीति	**51**
8.	वित्तीय बाज़ार	**56**
9.	राजकोषीय नीति	**60**
10.	कराधान	**61**
11.	बजट	**64**

12.	विदेशी व्यापार, भुगतान संतुलन और विदेशी निवेश	**67**
13.	कृषि क्षेत्र	**70**
14.	उद्योग और सेवा क्षेत्र	**74**
15.	केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप	**79**
16.	गरीबी	**83**
17.	सामाजिक विज्ञान के अर्थ एवं परिभाषा	**93**
18.	सामाजिक अध्ययन में प्रायोजना कार्य	**95**
19.	सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन, निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	**96**
20.	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	**99**
21.	सामाजिक अध्ययन में सहायक सामग्री	**101**

1 CHAPTER लोक प्रशासन

लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में अर्थ, प्रकृति, दायरा, विकास

अर्थ

- लोक प्रशासन एक अधिक व्यापक क्षेत्र का एक पहलू है। यह राजनीतिक निर्णय निर्माताओं द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक राजनीतिक व्यवस्था में मौजूद होता है।
- इसे सरकारी प्रशासन के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि लोक प्रशासन में लगे लोक का अर्थ ''सरकार'' होता है। इस प्रकार लोक प्रशासन का ध्यान लोक नौकरशाही पर अर्थात् सरकार के नौकरशाही संगठन पर केन्द्रित होता है।
- प्रशासन शब्द "Adminitration" शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Adminitration शब्द लेटिन भाषा के Administrare शब्द से बना है जिसका अर्थ ''सेवा करना या व्यवस्था करना'' होता है।
- लोक प्रशासन में ''लोक'' शब्द का अर्थ 'जनता' लिया जाता था जो बाद में ''सरकार'' से लिया जाने लगा।
- प्रशासन शब्द अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण वाला शब्द है।

लुथर गुलिक

''प्रशासन का संबंध कार्यों को पूरा करवाने और निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति कराने से है।''

हर्बर्ट साइमन

''व्यापक अर्थ में जो समूह सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सहयोग करते है उनके कार्यों को प्रशासन की संज्ञा दे सकते है।''

डिमॉक

''प्रशासन का संबंध के क्या और कैसे से है। क्या का अर्थ विषय–वस्तु है अर्थात् किसी क्षेत्र का तकनीकी ज्ञान जिससे एक प्रशासक अपने कार्यों को पूरा कराने में सक्षम हो।''

लोक प्रशासन की परिभाषाएँ

एल.डी. व्हाइट

''लोक प्रशासन में वे सभी कार्य आ जाते है जिनका उद्देश्य सार्वजनिक नीतियों को पूरा करना या लागू करना होता है।''

वुडरो विल्सन

'' कानून को विस्तृत एवं क्रमबद्ध रूप से क्रियान्वित करने का नाम ही लोक प्रशासन है। कानून को क्रियान्वित करने की प्रत्येक क्रिया एक प्रशासकीय क्रिया है।''

साइमन

'' साधारण प्रयोग में लोक प्रशासन का अर्थ राष्ट्रीय प्रान्तीय तथा स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं की क्रिया से है।''

विलोब

''लोक प्रशासन उस कार्य का प्रतीक है जो सरकारी कार्यों के वास्तविक सम्पादन से संबंध होता है, चाहे वे कार्य सरकार की किसी शाखा से संबंधित ही क्यों ना हो।''

प्रशासन व लोक प्रशासन में अन्तर

	प्रशासन	लोक प्रशासन
1.	प्रशासन एक सामान्य संदर्भ का शब्द है जिसका क्षेत्र व्यापक है।	लोक प्रशासन एक विशिष्ट संदर्भ का शब्द है, जो सार्वजनिक नीतियों से ही संबंधित हैं। अतः इसका क्षेत्र सीमित या संकीर्ण है।
2.	इसका संबंध शासन के मुख्य कार्यों से है जो लोगों के माध्यम से कार्य करता है।	लोक प्रशासन दोहरे अर्थ वाला है, एक अर्थ में यह अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान का एक शैक्षणिक विषय है, दूसरे अर्थ में इसे एक क्रियाशील विज्ञान कहा जा सकता है।
3.	प्रशासन एक क्रिया और प्रक्रिया का द्योतक है।	लोक प्रशासन का संबंध राष्ट्र की नीतियों के निर्माण और उसके क्रियान्वयन से है।
4.	प्रशासन एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र, सामाजिक संगठनों सभी में होती है।	लोक प्रशासन का संबंध केवल सार्वजनिक प्रशासन से होता है।

5.	प्रशासन वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामूहिक रूप से किया जाने वाला कार्य होता है।	लोक प्रशासन में सरकारी क्रियाकलापें होती है।
6.	प्रशासन के अन्तर्गत लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों शामिल होते है।	लोक प्रशासन, राष्ट्र की नीतियों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को लोक हित एवं प्रशासनिक संगठनों के द्वारा किया जाने वाला सामूहिक प्रयास है।

- वुडरो विल्सन अमेरिका के प्रिस्टन विश्वविद्यालय मे राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर थे।
- विल्सन ने 1887 में "Political Science Quartarly" नामक पत्रिका में "The Study of Administration" लेख लिखा।
- विल्सन के इस लेख से लोक प्रशासन का उद्भव माना जाता है।
- विल्सन ने लोक प्रशासन के एक अलग विषय के रूप में माँग की।

लोक प्रशासन की प्रकृति

लोक प्रशासन की प्रकृति के विश्लेषण के संबंध में दो दृष्टिकोण प्रचलित है–

1. एकीकृत दृष्टिकोण
2. प्रबन्धकीय दृष्टिकोण

एकीकृत दृष्टिकोण

- यह दृष्टिकोण व्यापक है। इसके समर्थकों के अनुसार निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सम्पादित की जाने वाल प्रक्रियाओं का समग्रीकरण या योग ही प्रशासन है।
- इस दृष्टिकोण के अनुसार किसी भी संगठन की उच्चतर से लेकर निम्नतर तक जो भी गतिविधियाँ होती वे सब लोक प्रशासन की प्रकृति में शामिल है।

एल. डी. व्हाइट

''लोक प्रशासन उन सभी कृत्यों से मिलकर बना है जिनका प्रयोजन लोक नीति को पूरा करना या उसे लागू करना होता है।''

समर्थक

एल.डी. व्हाइट, फिफनर, मार्क्स, डिमॉक आदि।

प्रबन्धकीय दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण संकुचित है। केवल उन्हीं लोगों के कार्यों को प्रशासन मानता है जो किसी उपक्रम संबंधी केवल प्रबन्धकीय कार्यों को सम्पन्न करते है। उस दृष्टिकोण के अनुसार संगठन में उच्च स्तर पर होने वाली गतिविधियाँ ही लोक प्रशासन की प्रकृति में शामिल है।

लुथर गुलिक

''प्रशासन का संबंध कार्य पूरा किये जाने और निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति से है।''

समर्थक

गुलिक, साइमन, स्मिथबर्ग, थॉमसन आदि।

नोट– लोक प्रशासन की प्रकृति को दोनों दृष्टिकोण एक–दूसरे के विपरीत नहीं है क्योंकि लोक प्रशासन एकीकृत दृष्टिकोण की प्रबन्धकीय गतिविधियों को भी शामिल करता है।

लोक प्रशासन का क्षेत्र

लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में भी विद्वानों मे एकमत नहीं है क्योंकि लोक प्रशासन एक गतिशील और विकासशील विषय है। इसलिए इसे विद्वानों ने अलग–अलग दृष्टिकोण में देखा और समझा।

लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित दृष्टिकोण प्रचलित है।

1. व्यापक दृष्टिकोण
2. संकुचित दृष्टिकोण
3. पोस्डकोर्ब दृष्टिकोण
4. लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण
5. पोकोक दृष्टिकोण
6. आधुनिक दृष्टिकोण

1. व्यापक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण में सरकार के तीनों अंग– व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका द्वारा सम्पादित कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

इसके अनुसार लोक प्रशासन के क्षेत्र में वे सभी क्रियाकलाप आते है जिनका प्रयोजन लोक नीति को पूरा करना या उसे लागू करना होता है।

समर्थक

विलोबी, मार्क्स, व्हाइट, नीग्रो आदि।

2. संकुचित दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन का संबंध शासन की केवल कार्यपालिका शाखा से है। प्रशासन में संगठन के सभी कार्यों को सम्मिलित नहीं करते केवल उन्हीं कार्यों को शामिल करते है जिनका संबंध प्रबंध की विधियों, तकनीकों, पद्धतियों से होता है और जो सभी संगठनों में सामान्य रूप से पाये जाते है।

समर्थक

साइमन, गुलिक, सियोन, विल्सन, गुडनॉव आदि।

3. **पोस्डकोर्ब दृष्टिकोण (POSDCORB)**

यह विचार लुथर गुलिक ने दिया। पोस्डकोर्ब शब्द अंग्रेजी के 7 अक्षरों से मिलकर बना।

POSDCORB

P = Planning (योजना बनाना)

O = Organising/Organisation (संगठन)

S = Staffing (कर्मचारियों की व्यवस्था करना)

D = Directing/Direction (निर्देशन करना)

Co = Coordination (समन्वय करना)

R = Reporting (प्रतिवेदन करना/प्रति–पुष्टि)

B = Budgeting (बजट तैयार करना)

गुलिक व उर्विक ने Papers on the Cience of the Administration नामक पुस्तक 1937 में प्रकाशित की जिसमें POSDCORB का उल्लेख किया गया है।

4. **लोक प्रशासन के क्षेत्र का लोक–कल्याणकारी दृष्टिकोण**

- इस दृष्टिकोण को आदर्शवादी दृष्टिकोण भी कहा जाता है।
- इस दृष्टिकोण में राज्य और प्रशासन के बीच अन्तर नहीं मानते है। उनका विचार है कि राज्य एक लोक कल्याणकारी अवधारणा है। अतः राज्य और प्रशासन दोनों ही लोक कल्याणकारी है तथा दोनों का लक्ष्य ही है– ''सब का जनहित''

समर्थक

एल.डी. व्हाइट, मर्सन, ड्रोट है।

5. **पोकोक दृष्टिकोण (POCCOC)**

यह अवधारणा हेनरी फेयोज ने दी।

P = Planning (नियोजन करना)

O = Organisation (संगठन)

C = Commanding (आदेश देना)

Co = Coordination (समन्वय करना)

C = Controlling (नियन्त्रण करना)

6. **आधुनिक दृष्टिकोण**

साइमन व गुलिक ने इसे परम्परागत दृष्टिकोण की संज्ञा दी।

नवीन लोक प्रबन्ध

- इंग्लैण्ड की तत्कालीन प्रधानमंत्री माग्रेट थेचर ने सरकार का घाटा कम करने के लिए निजीकरण को बढ़ावा दिया तथा संविदा पर भर्ती प्रारम्भ की।
- सरकारी अधिकारियों को निजी क्षेत्र की तरह व्यवहार करने पर बल दिया जिसे ''थेचरवाद'' कहा गया।
- इसे ही अमेरिका में ''रिगनोमिक्स'' कहा गया।
- लोक प्रषासन में इसे नवीन लोक प्रबन्धन कहा गया।
- नवीन लोक प्रबन्धन शब्द को प्रयोग 1991 में क्रिस्टोफर हुड ने किया।
- ऑस्बार्न व गोब्लर को नविन लोक प्रबन्ध का जनक कहा जाता है। इन्होनें 1992 में "Reinveting Government" नामक पुस्तक लिखी।

इस पुस्तक में निम्न सिद्धान्त बताये गये हैं–

- बाजारोन्मुखी सरकार : सरकार भी बाजार के अनुरूप लाभ कमाने के लिए कार्य करती है।
- ग्राहकोन्मुखी सरकार : जनता को एक ग्राहक के रूप में मानते हुए व्यवहार करना।
- **उत्प्रेरक सरकार :** प्रशासनिक अधिकारियों को समस्याओं का इन्तजार नहीं करना है बल्कि समस्याओं की कल्पना कर पहले से ही उनका समाधान तैयार रखना चाहिए।

SMART Government :

S = Simple

M = Model

A = Accouontable (जबाबदेही)

R = Responsible (उत्तरदायी)

T = Transparent (पारदर्शी)

3Es :

E = Economy (मितव्यय)

E = Efficiency (दक्षता)

E = Effectiveness (प्रभावशीलता)

लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में उद्विकास

1. **प्रथम चरण (राजनीति प्रशासन द्विविभाजन (1887–1926)**

- लोक प्रशासन राजनीति विज्ञान की ही शाखा है। राजनीति विज्ञान को लोक प्रशासन की जैविक माँ कहा जाता है।
- विल्सन के अनुसार राजनीति प्रशासन एवं प्रशासनिक प्रशासन दोनों अलग–अलग होनी चाहिए।
- विल्सन की लोक प्रशासन को एक अलग विषय के रूप में माँग ''विल्सन की पुकार'' कहलाती है।
- फ्रेक जे. गुडनाऊ ने 1900 में "Politics and Administration" नामक पुस्तक लिखी व दोनों की अलग–अलग बताया।

- गुडनाऊ को अमेरिकी लोक प्रशासन का जनक माना जाता है।
- 1926 में एल.डी. व्हाइट ने "Introduction to the Study of Public Administration" नामक पुस्तक लिखी। जिसे लोक प्रशासन की पहली पुस्तक माना जाता है।

2. दूसरा चरण (सिद्धान्तों का युग) (1927–1937)

- प्रत्येक विषय के सिद्धान्त होने चाहिए– 1927 में विलोबी ने "Principals of the Public Administration" नामक पुस्तक लिखी जिसे लोक प्रशासन के सिद्धान्तों की पहली पुस्तक मानी जाती है।
- 1937 के वर्ष को लोक प्रशासन विषय का चर्मोत्कर्ष कहा जाता है।
- दूसरे चरण को लोक प्रशासन का स्वर्ण काल कहा जाता है।

3. तीसरा चरण (चुनौतियों का युग) (1928–47)

- इस चरण को लोक प्रशासन के सिद्धान्तों को चुनौती दी गई।
- चेस्टर बर्नाड ने 1938 में "Functions of the Executive" नामक पुस्तक लिखी तथा उल्लेखित किया कि प्रत्येक संगठन में केवल औपचारिक संरचना ही नहीं होती बल्कि प्रत्येक संगठन में मानवीय पक्ष भी होता है।
- हरबर साइमन ने 1946 में Proverbs in Public Administration नामक पुस्तक लिखी। साइमन ने लोक प्रशासन में सिद्धान्त नाम की कोई चीज नही है, का उल्लेख किया।

4. चौथा चरण (पहचान का संकट) (1948–1970)

- बर्नार्ड, मेयो, साइमन की आलोचना के कारण लोक प्रशासन के अलग विषय के अस्तित्व पर संकट आ गया।
- रॉबर्ट डाहल ने 1947 में "Science of the Public Administarion—Three Problems" नामक पुस्तक लिखी व तीन समस्याएँ बतायी।
  1. लोक प्रशासन में तुलनात्मक अध्ययन का अभाव है।
  2. लोक प्रशासन का संबंध मानव से है।
  3. लोक प्रशासन में ''क्या है'' के स्थान पर ''क्या होगा'' होना चाहिए पर बल दिया जाता है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन

- F.W. रिग्स को तुलनात्मक लोक प्रशासन का जनक माना जाता है।
- रिग्स ने 1961 में "Ecology of Public Administration" नामक पुस्तक लिखी।
  रिग्स ने सभी प्रशासनिक व्यवस्थाओं को दो भागों में बाँटा–
  1. विकसित राष्ट्रों को रिग्स ने डिफ्रेक्टेड कहा।
  2. अत्यन्त पिछड़े हुए राष्ट्रों के फ्यूज्ड कहा।
- विकाकसशील देशों को प्रिज्मेटिक समाजन कहा।
- ''साला'' प्रिज्मेटिक समाज में पाई जाने वाली प्रशासनिक व्यवस्था है।

नवीन लोक प्रशासन

- 1967 में लोक प्रशासन के विद्वानों का फिलाडेल्फिया में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता जे.सी. चार्ल्स वर्थ ने की।
- 1968 में अमेरिकी सिराकुज विश्वविद्यालय के मिन्नोब्रुक हॉल में डिवाइड वाल्डों की अध्यक्षता में लोक प्रशासन के 33 विद्वानों का सम्मेलन हुआ।
- मिनोब्रुक सम्मेलन में लोक प्रशासन के चार नये सिद्धान्त दिये गये जिन्हें ही नवीन लोक प्रशासन कहा गया।

1. प्रासंगिकता

प्रशासन को देश की समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए।

2. मूल्य

प्रशासनिक अधिकारियों को केवल नियमों की कठोरता से पालना नहीं करवानी चाहिए।

3. परिवर्तन

प्रशासनिक अधिकारियों को समाज में परिवर्तन लाने वाले वाहक की भूमिका निभानी चाहिए।

4. साम्यता

- समाज के विभिन्न वर्गों के बीच व्याप्त असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।
- 1988 में मिनोब्रुक द्वितीय सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसका अध्यक्षता फ्रेड रिक्शन द्वारा की गयी। रिक्शन ने "New Public Administration" नामक पुस्तक लिखी।
- 2008 में मिनोब्रुक का तीसरा सम्मेलन आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता रोज मेरी ओ लेरी ने की।

संगठन के सिद्धान्त

- संगठन अंग्रेजी भाषा के Oraganisation शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।
- Organisaton शब्द लेटिन भाषा के Organism शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ अवयव होता है।
- संगठन मानवीय और भौतिक संसाधनों की व्यवस्था है जो किसी एक विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्थापित की जाती है।
- संगठन दो प्रकार के होते है–
  1. औपचारिक संगठन
  2. अनौपचारिक संगठन

1. औपचारिक संगठन

- इसके नियम, प्रक्रिया, सिद्धान्त निर्धारित होते है।

चेस्टर बर्नार्ड

- जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों की क्रियाएँ समान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जान–बूझकर समन्वित की जाती है तो उसे औपचारिक संगठन कहते है।

एलेन

- ''औपचारिक संगठन कार्यों की समुचित ढ़ंग से परिभाषित पद्धति है जिसमें प्रत्येक के अधिकार, उत्तरदायित्व तथा जवाबदेही की निश्चित परिमाप होती है।''
- इसमें उत्तरदायित्व को निर्धारित करना आसान होता है। क्योंकि आपसी संबंध स्पष्ट रूप से समझाए हुए होते है। आदेश श्रृंखला के स्थापन से आदेश की एकता बनी रहती है।

2. अनौपचारिक संगठन

- काम करते समय व्यक्तियों में आपसी तालमेल से स्थापित संगठन होता है। कर्मचारियों में सामाजिक संबंधों का तंत्र उदय होना अनौपचारिक संगठन कहलाता है।

चेस्टर बर्नार्ड

- वह संगठन अनौपचारिक है जिसमें आपसी संबंध अज्ञानवश संयुक्त उद्देश्यों के लिये बनाते है।

संगठन का महत्व

- विशिष्टीकरण के लाभ
- कार्य करने में संबंधों का स्पष्टीकरण
- संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग
- परिवर्तनों का अनुकूलन
- प्रभावी प्रशासन
- कार्मिकों का विकास
- विकास एवं विस्तार

संगठन की अवधारणा

- कार्य की पहचान तथा विभाजन
- कर्त्तव्यों का निर्धारण
- विभागीकरण
- वृत्तांत (रिर्पोटिंग) संबंध स्थापन

संगठन की विचारधारा

शास्त्रीय विचार धारा

- इसे संगठन की प्रथम एवं परम्परागत् विचार धारा कहा जाता है।
- यह विचार धारा मानव को मशीन के रूप में देखती है।
- इसके अनुसार कोई भी व्यक्ति आर्थिक कारकों से प्रभावित होकर कार्य करता है। इस कारण इसे यांत्रिक विचारधारा भी कहा जाता है।
- टेलर, फेयोल, गुलिक, उर्विक तथा मुने व रिले इस विचार धारा के समर्थक है।

टेलर का वैज्ञानिक प्रबंधन सिद्धान्त

- वैज्ञानिक प्रबंधन शब्द की पहली बार लुई बैंडीज ने प्रयोग किया था।
- टेलर ने सांगठनिक कुशलता और वित्त को बढ़ावा देने के लिए इस शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक पद्धति और तकनीकी की पूर्ण क्रमबद्ध व्याख्या के लिए किया।
- वैज्ञानिक प्रबंधन को ''टेलरवाद'' भी कहा जाता है।

टेलर की प्रमुख पुस्तकें

1. A Peace Rate System- 1895
2. Shop Management- 1903
3. Art of the Cuting Matals- 1906
4. Principles of the Scientific Management- 1911
   - टेलर के अनुसार प्रबंधन सच्चा विज्ञान है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से निर्धारित कानूनों, नियमों और सिद्धान्तों पर आधारित है।
   - यह हर प्रकार के संगठन में सार्वभौमिक रूप से लागू होता है।
   - इनका लक्ष्य काम की भौतिक प्रकृति और कर्मचारियों की शारीरिक प्रकृति के बीच संबंध का अध्ययन करना था।
   - टेलर के समक्ष सबसे बड़ी समस्या थी – कम उत्पादकता।
   - औद्योगिक संगठनों में अपने प्रयोगों के दौरान टेलर का सामना कामचोरी की परिघटना से हुआ।
   - उन्होनें इस परिघटना को दो भागों में बाँटा –
     1. स्वभाविक कामचोरी
     2. व्यवस्थित कामचोरी

- स्वभाविक कामचोरी व्यक्तिगत् कारकों जैसे – आराम से काम करना, ज्यादा परिश्रम न करना इसी प्रकार की आदतों का नतीजा है।
- व्यवस्थित कामचोरी–सांगठनिक एवं सामाजिक कारकों का परिणाम है।

टेलर की कल्पानाएँ

1. वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से सांगठनिक कार्यप्रणाली उन्नत की जा सकती है।
2. एक अच्छा मजदूर काम को शुरू करने वाला नहीं बल्कि प्रबंधन के निर्देशों को मानने वाला हो।
3. हर मनुष्य एक ''आर्थिक मनुष्य'' है यानी वह आर्थिक कारकों से ही प्रेरित होता है।

टेलर ने वैज्ञानिक प्रबंधन के चार सिद्धान्त दिये

1. मानव कार्य के प्रत्येक संघटक के लिए विज्ञान विकसित करना, जो पुरानी 'व्यवहार' पद्धति की जगह लेगा।
2. वैज्ञानिक तरीके से मजदूरों का चयन और फिर उन्हें शिक्षित, प्रशिक्षित और विकसित करना।
3. इस लक्ष्य के लिए विकसित वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार ही काम हो रहा है। यह सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन मजदूरों को पूरी तरह सहयोग करें।
4. प्रबंधन और मजदूरों के बीच कामों का समान बँटवारा जरूरी है।

वैज्ञानिक प्रबंधन के तकनीकें

1. **कार्यात्मक फोरमैनशिप**
   - टेलर के अनुसार संगठन में एक बॉस होने के स्थान पर आठ बॉस होने चाहिए। जो मजदूरों की अलग–अलग गतिविधियों को नियंत्रित करेंगे।
   - इन आठ कार्यात्मक फोरमैनों में से चार योजना के लिए जिम्मेदार होते हैं–
     1. कार्यक्रम व रूट क्लर्क
     2. निर्देश–कार्ड क्लर्क
     3. समय व लागत क्लर्क
     4. कारखाना अनुशासक
2. **गति का अध्ययन**
   यह कार्य पद्धतियों के मानकीकरण की एक तकनीक है। इसमें किसी कार्य विशेष में समाहित सभी गतियों का अवलोकन और फिर गतियों के सर्वश्रेष्ठ समुच्चय का निर्धारण शामिल है। यह काम करने के एक सर्वश्रेष्ठ रास्ते की तलाश के लिए बना था।
3. **समय का अध्ययन**
   एक कार्य को पूरा करने में लगने वाला औसत समय को निकालना।
4. **अंतरीय पीस रेट (विभेदात्मक मजदूरी प्रणाली)**
   टेलर ने गति और समय अध्ययनों द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर पीस रेट द्वारा भुगतान का सुझाव दिया। टेलर के अनुसार प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन पर अतिरिक्त मजदूरी दी जानी चाहिए।
5. **अपवाद सिद्धान्त**
   जब तक कर्मचारियों द्वारा निर्धारित उत्पादन किया जाता है तब तक प्रबंधन को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। जब कर्मचारियों द्वारा अधिक उत्पादन किया जाता है तो उन्हें पुरस्कार एवं कम करने दण्ड दिया जाना चाहिए।

टेलर की मानसिक क्रांति

1. वैज्ञानिक प्रबंध से पूर्व कर्मचारियों की यह मान्यता थी कि अधिक उत्पादन से केवल प्रबंधक को लाभ होता है जबकि प्रबंधन की ये मान्यता थी कि सभी कर्मचारी कामचोर होते है।
2. इस परम्परागत् सोच के स्थान पर प्रबंधन और कर्मचारी अधिक उत्पादन हेतु प्रयास करें।
3. प्रबंधन और कर्मचारी अपनी परम्परागत् मानसिकता को बदल कर अधिक उत्पादन करते है। टेलर के अनुसार इसका लाभ दोनों को होता है।

रेबल परिकल्पना

इसके अनुसार यदि किसी संगठन में कम उत्पादन होता है तो इसका मुख्य कारण कम वेतन, भौतिक सुख–सुविधाओं का अभाव है। अधिक वेतन व्यक्ति को अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

हेनरी फेयोल

- फेयोल को शास्त्रीय विचारधारा का जनक माना जाता है।
- फेयोल ने 1916 में General and Indurtril Management नामक पुस्तक लिखी।

वैज्ञानिक प्रबंधन के 14 सिद्धान्त दिये जो निम्न है –

1. **कार्य विभाजन**
   - फेयोल के अनुसार सभी प्रबंधकीय या तकनीकी कार्यों में यह सिद्धान्त समान रूप से लागू किया जा सकता है।
   - जो व्यक्ति जिस कार्य को जानता है उसे वे कार्य दिये जाने चाहिए।
     - ➢ विशिष्टीकरण की प्राप्ति
     - ➢ मानवीय और भौतिक संसाधनों की कार्य कुशलता में वृद्धि
     - ➢ नियोजन समन्वय और नियंत्रण की समस्या से निपटने मे सहयोगी
     - ➢ कार्यों के मानक स्तर तय करने में उपयुक्त

2. **सत्ता का उत्तरदायित्व**
   - सत्ता व दायित्व में घनिष्ठ संबंध होता है।
   - प्रत्येक कार्मिक की सत्ता और दायित्वों की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए।
   - सत्ता व उत्तरदायित्व में समानता होनी चाहिए।
     - संगठन में किसी व्यक्ति को दायित्व देने के पश्चात् उसको करने हेतु सत्ता भी दी जानी चाहिए।
3. **अनुशासन**
4. **आदेश**
5. **पद सोपान**
   - प्रत्येक आदेश ऊपर से नीचे की ओर तथा प्रत्येक आवेदन नीचे से ऊपर की ओर उचित प्रक्रिया से प्रवाहित होना चाहिए।
   - फेयोल ने पदसोपान को ''स्केलन चैन'' की संज्ञा दी।
   - फेयोल के अनुसार पदसोपान का कठोरता से पालन करने पर कार्यों में देरी होती है। कार्यों मे देरी को रोकने के लिए एक अधिकारी अपने उच्चतर अधिकारी को सूचना देते हुए अपने समकक्ष अधिकारी से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकता है। जिसे फेयोल ने ''गैंग प्लांक'' कहा जाता है।
6. **आदेश की एकता**
   फेयोल को इस सिद्धान्त का जनक माना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार कार्य के सही संपादन के लिए आवश्यक है कि एक कार्मिक को एक समय पर एक ही अधिकारी से आदेश मिले।
7. **निर्देश की एकता**
   - निर्देश की एकता आदेश की एकता का ही भाग है। जहाँ आदेश की एकता का संबंध एक कार्मिक से है वही निर्देश की एकता का संबंध सम्पूर्ण संगठन से है।
   - फेयोल के अनुासर सभी कार्यों प्रयासों में समन्वय के लिए आवश्यक है कि उनकों एक ही योजना के अनुरूप निर्देशित किया जाए।
8. **नियन्त्रण की सीमा**
   एक उच्च अधिकारी द्वारा प्रभावी ढ़ंग से कितने अधीनस्थों पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सकता है।
9. **व्यक्तिगत हितों तथा संगठन के हितो में समन्वय :**
   फेयोल के अनुसार संगठन की सफलता वैयक्तिक और सामान्य हितों के मध्य उचित समन्वय या संतुलन पर निर्भर करती है।
10. **केन्द्रीकरण**
    संगठन की सारी शक्तियाँ एक व्यक्ति में निहित होनी चाहिए।
11. **वेतन :**
    - समान कार्यों के लिए समान वेतन दिया जाए।
    - पारिश्रमिक के मामले में भेदभाव नही करना चाहिए।
12. **पहल**
    संगठन के हितों के लिए व्यक्ति को पहल करनी चाहिए।
13. **इकोल डिस्प्रिट :**
    संगठन के सभी सदस्यों को टीम भावना से कार्य करना चाहिए।
14. **स्थायित्व :**
    संगठन के कर्मचारियों की भर्ती संविदा पर आधारित नहीं होनी चाहिए। कर्मचारियों की पदावधि में स्थायित्व होना चाहिए।

उर्विक के आठ सिद्धान्त

1. समरूपता एवं अनुरूपता का सिद्धान्त : सत्ता और कर्त्तव्यों में समरूपता हो।
2. उद्देश्यों का सिद्धान्त : सर्वप्रथम उद्देश्यों स्पष्ट किये जाने चाहिए।
3. परिभाषा का सिद्धान्त : संगठन में काम करने वाले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के अधिकारों तथा कार्यों को स्पष्ट परिभाषित किया जाए।
4. नियन्त्रण की सीमा का सिद्धान्त : उर्विक के अनुसार एक उच्च अधिकारी 5 से 6 कर्मचारियों को प्रभावी ढंग से नियन्त्रण कर सकते है।
5. विशेषज्ञता का सिद्धान्त : जो व्यक्ति जिस कार्य के लिए विशेषज्ञ है उसे वे ही कार्य दिये जाने चाहिए।
6. पदसोपान का सिद्धान्त
7. समन्वय का सिद्धान्त : मुने व रिले ने समन्वय को संगठन का एकमात्र सिद्धान्त कहा है।
8. उत्तरदायित्वों का सिद्धान्त

गुलिक का सिद्धान्त

1. कार्य विभाजन
2. प्रत्योजन **(Delegation)**: उच्च अधिकारियों द्वारा अपने कार्य भार को कम करने के लिए अपने निम्न अधिकारी को कार्य सौंपना प्रत्यायोजन कहलाता है। प्रत्यायोजन में अन्तिम उत्तरदायित्व उच्च अधिकारी का होता है।
3. संगठन की स्थापना के 4 आधार
   गुलिक के अनुसार संगठन चार आधारो पर स्थापित किये जाते है, इन्हें संयुक्त रूप से 4Ps कहा जाता है–

3 CHAPTER अर्थव्यवस्था का परिचय

- अर्थशास्त्र वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, उपभोग और वितरण जैसी गतिविधियों का अध्ययन है।
- प्राचीन भारत में चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) ने "अर्थशास्त्र" नामक ग्रंथ की रचना की थी, हालांकि इसका मुख्य केंद्रबिंदु राजनीति है, न कि अर्थशास्त्र।
- एडम स्मिथ को 'अर्थशास्त्र का जनक' कहा जाता है।
- एडम स्मिथ के अनुसार, "अर्थशास्त्र राष्ट्रों की संपत्ति की प्रकृति और कारणों की जांच है।"

अर्थशास्त्र की शाखाएँ:

1. **व्यष्टि अर्थशास्त्र:** इसमें मांग और आपूर्ति के बीच संबंध, वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य निर्धारण तथा व्यक्तिगत या फर्म स्तर पर संसाधनों का आवंटन जैसे विषय शामिल है।
2. **समष्टि अर्थशास्त्र:** इसमें राष्ट्रीय उपभोग और उत्पादन, समग्र मूल्य स्तर, महंगाई, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, बेरोजगारी और अन्य समग्र आर्थिक संकेतक जैसे विषय शामिल है।

जे एम कीन्स (1883-1996): समष्टि अर्थशास्त्र के जनक।

अर्थव्यवस्था के प्रकार (स्वामित्व के आधार पर)

तुलनात्मक आधार	पूंजीवादी अर्थव्यवस्था	समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वामित्व	निजी	राज्य	सार्वजनिक एवं निजी
उद्देश्य	लाभ कमाना	सामाजिक कल्याण	विकास और कल्याण
निर्णय-निर्माण	बाजार की शक्तियाँ	केंद्रीय योजना	बाजार + राज्य
असमानता	अधिक	कम	मध्यम
उदाहरण	अमेरिका, हांगकांग	भारत (1991 तक), सोवियत संघ, क्यूबा	भारत, फ्रांस

अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र :

- **औपचारिक क्षेत्र (संगठित):** इस क्षेत्र में वे व्यवसाय आते है जो सरकार के साथ आधिकारिक रूप से पंजीकृत होते है और विभिन्न नियमों जैसे कंपनी अधिनियम, फैक्ट्री अधिनियम, श्रम कानून आदि के अंतर्गत संचालित होते है।
- **अनौपचारिक क्षेत्र (असंगठित):** इस क्षेत्र में वे व्यवसाय आते है जो बिना किसी कानूनी विनियमन के और नियमित वित्तीय रिकॉर्ड रखे बिना संचालित होते हैं। उदाहरण: भूमिहीन मजदूर, छोटे किसान, फुटपाथ विक्रेता आदि।

अर्थव्यवस्था की आधारिक संरचना:

1. **प्राथमिक क्षेत्र:** वे उद्योग जो प्राकृतिक संसाधनों के दोहन या कच्चे माल के उत्पादन से संबंधित होते हैं। भारत में सर्वाधिक आबादी इसी क्षेत्र में संलग्न है। उदाहरण: मछली पकड़ना, कृषि/खेती, खनन आदि।
2. **द्वितीयक क्षेत्र:** वे उद्योग जो उपयोगी या तैयार वस्तुओं के निर्माण से संबंधित होते है। उदाहरण: भारी उद्योग जैसे स्टील और ऑटोमोबाइल, हल्के उद्योग जैसे खाद्य प्रसंस्करण और प्रसाधन।
3. **तृतीयक क्षेत्र:** वे उद्योग जो व्यवसायों या अंतिम उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में सबसे अधिक योगदान करता है। उदाहरण: स्वास्थ्य सेवाएँ, बीमा आदि।

4. **चतुर्थक क्षेत्र:** वे उद्योग जो ज्ञान के सृजन और प्रसार पर केंद्रित होते है। उदाहरण: अनुसंधान और विकास, शिक्षा आदि।
5. **पंचम क्षेत्र:** वे क्षेत्र जो अर्थव्यवस्था में सर्वोच्च स्तर के निर्णय-निर्माण से जुड़े होते हैं। उदाहरण: नीति आयोग के सदस्य, वैज्ञानिक, न्यायाधीश, नोबेल पुरस्कार विजेता आदि।

भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य:

- भारत की अर्थव्यवस्था सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर विश्व में चौथे स्थान पर है (अमेरिका > चीन > जर्मनी > भारत > जापान)।
- क्रय शक्ति समता के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में तीसरे स्थान पर है।
- विकास के उच्चतम स्तर पर GDP में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान इस प्रकार होता है: कृषि < उद्योग < सेवा क्षेत्र।
- भारत कृषि उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत वैश्विक कृषि उत्पादन में 7.39 प्रतिशत का योगदान करता है।
- **वर्तमान में भारतीय GDP में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान इस प्रकार है**: कृषि (16.5%), उद्योग (29.01%) और सेवा क्षेत्र (53.09%)।
- देश की सकल आय में कृषि का हिस्सा लगातार घट रहा है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्रों का हिस्सा निरंतर बढ़ रहा है। लेकिन आजीविका के दृष्टिकोण से अब भी भारत की 48.7 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र पर निर्भर है।
- **कार्यबल के अनुसार क्षेत्रीय भागीदारी:** कृषि (48%), तृतीयक क्षेत्र (27%), द्वितीयक क्षेत्र (24%)।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान वैश्विक औसत (6.4%) से कहीं अधिक है। जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्रों का योगदान वैश्विक औसत से कम हैजो उद्योग क्षेत्र के लिए 30% और सेवा क्षेत्र के लिए 63%।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4 CHAPTER राष्ट्रीय आय

- **राष्ट्रीय आय लेखांकन** के माध्यम से किसी देश की **कुल आर्थिक गतिविधियों का मूल्यांकन** किया जाता है।
  राष्ट्रीय आय = उपभोग + निवेश + सरकारी व्यय + निवल निर्यात (निर्यात - आयात)
  जहाँ:
  - ✓ **निर्यात (X)** = भारत के नागरिकों द्वारा विदेशों से प्राप्त आय एवं निर्यात से होने वाली आय
  - ✓ **आयात (M)** = आयात पर किया गया व्यय एवं विप्रेषण

  साइमन कुजनेत्स को राष्ट्रीय आय लेखांकन का जनक कहा जाता है।
- **भारत के ग्रांड ओल्डमैन दादाभाई नौरोजी** ने 1876 में भारत की राष्ट्रीय आय का पहला अनुमान प्रस्तुत किया था जिसमें ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभाव को रेखांकित किया।
- **डॉ. वी.के.आर.वी. राव** (वैज्ञानिक विधि द्वारा राष्ट्रीय आय का आकलन) ने स्वतंत्रता से पूर्व राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए बाद में उत्पादन और आय गणना विधियों के संयोजन का प्रयोग किया।

राष्ट्रीय आय समिति, 1949

- स्वतंत्रता के बाद, **अगस्त 1949** में भारत सरकार ने **राष्ट्रीय आय का आकलन करने हेतु "राष्ट्रीय आय समिति"** की स्थापना की।
- **प्रोफेसर पी. सी. महालनोबिस** को समिति का **अध्यक्ष** नियुक्त किया गया और **प्रो. डी. आर. गाडगिल** तथा **डॉ. वी. के. आर. वी. राव** इसके सदस्य थे ।
- इस समिति ने पहली रिपोर्ट 1951 में प्रस्तुत की जिसमें वर्ष 1948-49 के लिए भारत की राष्ट्रीय आय ₹8,710 करोड़ और प्रति व्यक्ति आय ₹225 अनुमानित की गई।

मुख्य संकेतक:

1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP)
2. शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)
3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)
4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)
5. सकल राष्ट्रीय आय (GNI)
6. शुद्ध राष्ट्रीय आय (NNI)

- **भारत में** राष्ट्रीय आय की गणना **केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO)** द्वारा की जाती है।

राष्ट्रीय आय से संबंधित प्रमुख अवधारणाएँ:

1. **सकल घरेलू उत्पाद: यह** किसी देश की सीमाओं के भीतर **एक निश्चित समय (सामान्यत: 1 वित्तीय वर्ष) में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल बाज़ार मूल्य** को दर्शाता है। इसमें देश के भीतर कार्यरत **घरेलू और विदेशी कंपनियाँ**, दोनों शामिल होती है।
2. **राष्ट्रीय आय (NI):** देश के नागरिकों द्वारा **देश के भीतर अथवा विदेशों में अर्जित की गई कुल कारक आय** को राष्ट्रीय आय कहा जाता है। **वास्तविक राष्ट्रीय आय** महँगाई के प्रभाव को समायोजित करती है।
   सूत्र:
   बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद /$NNP_{(MP)}$ = कारक लागत पर NNP/$NNP_{(FC)}$ + अप्रत्यक्ष कर – सब्सिडी
   $NNP_{(MP)} = NNP_{(FC)}$ + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर
3. **शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP):** सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्यह्रास घटाने के बाद यह प्राप्त होता है।
   सूत्र: NDP = GDP − मूल्यह्रास
   - ✓ मूल्यह्रास किसी परिसंपत्ति के लगातार उपयोग और तकनीकी परिवर्तन के कारण समय के साथ उसके मूल्य में होने वाली कमी को दर्शाता है।

4. **व्यक्तिगत आय (PI):** यह राष्ट्रीय आय में से परिवारों को प्राप्त हिस्से को दर्शाती है जिसमें से अवितरित लाभ, निगम कर, शुद्ध ब्याज भुगतान घटाए जाते है और अंतरण भुगतान जोड़े जाते है।

   सूत्र:

   PI = राष्ट्रीय आय − अवितरित लाभ − शुद्ध ब्याज भुगतान − निगम कर + अंतरण भुगतान

   - ✓ **अवितरित लाभ** वे लाभ होते हैं जो कंपनियों या सार्वजनिक उद्यमों द्वारा उत्पादन के कारकों को वितरित नहीं किए जाते।
   - ✓ **अंतरण भुगतान** वे राशि होती है जो सरकार या कंपनियों द्वारा पुरस्कार, पेंशन आदि के रूप में परिवारों को दी जाती है। यह PI में जोड़ी जाती है।

5. **व्यक्तिगत व्यय योग्य आय (PDI):** यह **व्यक्तिगत करों और गैर-कर भुगतानों के बाद** परिवारों के पास **शेष बची आय को दर्शाता है जिसका उपयोग वे उपभोग या बचत** के लिए कर सकते है।

   सूत्र:

   PDI = व्यक्तिगत आय − व्यक्तिगत कर भुगतान − गैर-कर भुगतान

   - ✓ यह दर्शाता है कि परिवारों के पास उपभोग या बचत के लिए कितनी आय उपलब्ध है।

6. **सकल मूल्य वर्धन (GVA):** यह किसी क्षेत्र द्वारा मध्यवर्ती उपभोग को घटाने के बाद उत्पादित वस्तुओं/सेवाओं का मूल्य है।

   सूत्र:

   GVA = उत्पादन − मध्यवर्ती उपभोग।

   - ✓ यह **कृषि, उद्योग एवं सेवा** जैसे क्षेत्रों द्वारा अर्थव्यवस्था में किए गए योगदान को दर्शाता है।

7. **प्रति व्यक्ति आय (PCI):** यह **प्रत्येक व्यक्ति की औसत आय** को दर्शाती है, जिससे किसी देश के नागरिकों के **जीवन स्तर और आर्थिक स्थिति** का पता चलता है।

   सूत्र:

   $$\textbf{PCI} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$$

मूल्य अवधारणाएँ

- ➢ **कारक लागत (FC):** उत्पादन की वह लागत जिसमें कर और सब्सिडी शामिल नहीं होते।
- ➢ **मूल मूल्य (Basic Price):** कारक लागत + उत्पादन कर − उत्पादन सब्सिडी।
- ➢ **बाजार मूल्य (MP):** मूल मूल्य + उत्पाद कर − उत्पाद सब्सिडी।

राष्ट्रीय आय की गणना करने वाले संगठन:

संगठन	विवरण
केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO)	➢ **स्थापना**: 2 मई, 1951 ➢ **मुख्यालय**: नई दिल्ली ➢ **कार्य**: राष्ट्रीय आय की गणना और प्रकाशन
राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO)	➢ **स्थापना**: 1950 (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के रूप में) ➢ **पुनः-स्थापना**: 1970-71 (NSSO के रूप में स्थापित) ➢ **मुख्यालय**: कोलकाता; कार्य: आर्थिक सर्वेक्षण का संचालन
राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग (NSC)	➢ **स्थापना**: 2005 ➢ **कार्य प्रारंभ**: 2006 ➢ कार्य: सांख्यिकीय संस्थाओं से संबंधित समस्याओं का समाधान
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)	➢ **स्थापना**: 23 मई, 2019 (CSO और NSSO को मिलाकर गठित) ➢ कार्य: राष्ट्रीय आय से संबंधित आंकड़ों का प्रकाशन और विश्लेषण

5 CHAPTER मुद्रा और मुद्रास्फीति

- **मुद्रा** सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए विनिमय या भुगतान के माध्यम के रूप में कार्य करती है।
- **मुद्रा** को सामान्य रूप से विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापन, मूल्य संचय और स्थगित भुगतानों के मानक के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- **प्रो. वॉकर** के अनुसार, "मुद्रा वही है जो मुद्रा का कार्य करती है।"
- **अल्फ्रेड मार्शल के अनुसार,** "मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों ओर समस्त आर्थिक विज्ञान केंद्रित है।"

उदय कुमार द्वारा डिज़ाइन किये गये और 2010 में अपनाये गये रुपये का प्रतीक चिन्ह (₹) देवनागरी अक्षर **'र'** और रोमन अक्षर **'R'** का संयोजन है। इसमें दी गई **समांतर रेखाएं** भारतीय **तिरंगे** का प्रतिनिधित्व करती है और यह **स्थिरता** का प्रतीक हैं।

मुद्रा का विकास

मुद्रा के कार्य

I. प्राथमिक कार्य (मूल)-

1. **विनिमय का माध्यम:** यह वस्तुओं और सेवाओं की सहज खरीद और बिक्री को संभव बनाता है।
2. **मूल्य का मापक (लेखा इकाई):** मूल्य और लेखांकन को मौद्रिक शब्दों में व्यक्त किया जाता है, जिससे तुलना और मूल्यांकन आसान हो जाता है।

II. द्वितीयक कार्य (सहायक)

1. **मूल्य का संचय:** मुद्रा को भविष्य में उपयोग के लिए बचाकर रखा जा सकता है।
   - ✓ यह वर्तमान से भविष्य में क्रय शक्ति के हस्तांतरण में सहायता करती है।
2. **स्थगित भुगतानों का मानक:** मुद्रा का उपयोग भविष्य के भुगतानों जैसे ऋण, वेतन तथा दीर्घकालीन अनुबंधों में किया जाता है।
   - ✓ यह ऋण प्रणाली को बढ़ावा देती है और आर्थिक विकास में सहायक होती है।
3. **मूल्य/क्रय-शक्ति का स्थानांतरण:** मुद्रा के माध्यम से धन या क्रय शक्ति को एक व्यक्ति या स्थान से दूसरे तक आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है।
   - ✓ यह देश के भीतर और बाहर व्यापार तथा लेन-देन को सरल बनाती है।

मुद्रा के प्रकार

1. **भौतिक रूप के आधार पर-**
   - ✓ **कमोडिटी मनी**: ऐसी मुद्रा जिसका स्वयं का एक अंतर्निहित मूल्य या कीमत होती है। जैसे— सोना, चांदी, मवेशी।
   - ✓ **फिएट मनी**: सरकार द्वारा जारी की गई ऐसी मुद्रा जिसका कोई अंतर्निहित मूल्य नहीं होता परंतु यह कानून **द्वारा** स्वीकृत होती है। जैसे—मुद्राएं, सिक्के, वाणिज्यिक पत्र।
   - ✓ **प्रतिनिधि मुद्रा**: ये किसी आंतरिक मूल्य वाली मुद्रा का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे— सोने या चांदी के बदले प्रमाण **पत्र**।

2. **कानूनी स्थिति के आधार पर**
   - ✓ **वैध मुद्रा (लीगल टेंडर)**: ऐसी मुद्रा जिसे ऋण के भुगतान **हेतु स्वीकार करना क़ानूनी बाध्यता होती है**। जैसे—भारतीय रुपये के नोट और सिक्के।
   - ✓ **ग़ैर-वैध मुद्रा**: जिसे कानून द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है परंतु यह लेन-देन में व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है। जैसे—चेक, माँग ड्राफ्ट।
3. **प्रौद्योगिकी के आधार पर**
   - ✓ **प्लास्टिक मनी**: इसमें इलेक्ट्रॉनिक भुगतान हेतु प्रयुक्त क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और प्रीपेड कार्ड शामिल होते है।
   - ✓ **बुलियन**: इसमें मुख्य रूप से सोना और चांदी जैसी बहुमूल्य धातुएँ शामिल होती है जिन्हें उनके मुद्रित मूल्य की बजाय वज़न और शुद्धता के आधार पर आंका जाता है।
   - ✓ **इलेक्ट्रॉनिक / डिजिटल मुद्रा**: ऐसी मुद्रा जो नेट बैंकिंग, यूपीआई और ई-वॉलेट (जैसे—Paytm, Google Pay) जैसी डिजिटल प्रणालियों में लेन-देन हेतु उपयोग होती है।
   - ✓ **क्रिप्टोकरेंसी**: ये ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा (जैसे—बिटकोइन, इथेरियम) है। भारत में यह अवैध नहीं है, परंतु इसे वैध मुद्रा के रूप में मान्यता भी प्राप्त नहीं है।
   - ✓ **ई-रूपी (CBDT)**: सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समर्थित एक कैशलेस और संपर्क-रहित प्रीपेड डिजिटल वाउचर, जिसे SMS या QR कोड के माध्यम से वितरित किया जाता है। यह कार्ड या ऐप के बिना सीधा, लक्षित और पारदर्शी लाभ अंतरण सुनिश्चित करता है।
4. **मुद्रा आपूर्ति के आधार पर**
   - ✓ मुद्रा आपूर्ति किसी अर्थव्यवस्था में एक समय विशेष पर उपलब्ध कुल मुद्रा (मुद्राएं + बैंक जमा) भंडार को दर्शाती है।

मुद्रा गुणक

- ➢ **मुद्रा गुणक** यह बताता है कि कैसे प्राम्भिक जमा राशि किसी अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति को बढ़ाती है। बैंक अपनी आरक्षित आवश्यकताओं के बाद शेष राशि उधार देते है जो बाजार में कई रूपों में चक्रित होती रहती है एवं मुद्रा आपूर्ति को कई गुना बढ़ा देती है ।
  - ✓ **आरक्षित निधि** वे जमा राशि होती है जिन्हें बैंकों द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक के पास अनिवार्य रूप से जमा करना होता है और इसे उधार नहीं दे सकते।
- ➢ यह मापता है कि मुद्रा अर्थव्यवस्था में कितनी बार घूमती है और यह दिखाता है कि प्रारंभिक जमा राशि किस प्रकार से कई चरणों में ऋण सृजन को जन्म देती है।
- ➢ **सूत्र :**

$$\text{मुद्रा गुणक} = \frac{1}{\text{r}} \text{ या } \frac{\text{व्यापक मुद्रा (M3)}}{\text{आरक्षित मुद्रा (M0)}}$$

जहाँ **r** आरक्षित अनुपात है।

- ➢ मुद्रा गुणक (M) की मात्रा सीधे **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)** पर निर्भर करती है अर्थात् अतिरिक्त आय का वह अनुपात जो उपभोग पर व्यय किया जाता है।

$$\text{M} = \frac{1}{1 - \text{MPC}}$$

- ➢ सीमांत उपभोग प्रवृति जितनी अधिक होगी, मुद्रा गुणक भी उतना ही अधिक होगा क्योंकि अधिक खर्च अधिक आय और जमाओं को प्रेरित करता है।

मुद्रा त्वरक

- ➢ **त्वरक सिद्धांत** यह समझाता है कि किसी अर्थव्यवस्था में निवेश का स्तर वस्तुओं और सेवाओं की मांग में होने वाले परिवर्तनों पर निर्भर करता है।
- ➢ जब मांग में वृद्धि होती है तो व्यवसायी उत्पादन क्षमता बढ़ाने हेतु पूंजीगत वस्तुओं में निवेश बढ़ाते है जिससे आर्थिक विकास तीव्र होता है।
- ➢ उच्च त्वरक का अर्थ है कि आय में थोड़ी सी वृद्धि भी निवेश में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि का कारण बनती है।

सूत्र:

$$\text{त्वरक} = \frac{\Delta \text{I}}{\Delta \text{Y}}$$

जहाँ:

- ✓ ΔI = निवेश में परिवर्तन
- ✓ ΔY = आय (उत्पादन या सकल **घरेलू** उत्पाद) में परिवर्तन

सुपर गुणक, गुणक और त्वरक के संयुक्त प्रभाव को दर्शाता है जो यह स्पष्ट करता है कि उपभोग और निवेश मिलकर किस प्रकार आर्थिक वृद्धि को संचालित करते हैं।

भारत में कागजी मुद्रा का निर्गमन

- भारत में कागजी मुद्रा का निर्गमन 1861 के बाद सरकार के एकाधिकार में आ गया।
- महात्मा गांधी की छवि वाली पहली मुद्रा ₹500 का नोट थी, जिसे 1957 में जारी किया गया था।
- 1996 से, सभी भारतीय नोटों पर महात्मा गांधी का चित्र होता है।
- प्रत्येक भारतीय मुद्रा नोट पर हिंदी और अंग्रेज़ी को मिलाकर कुल 17 भाषाओं में अभिलेख होते है।
- भारत विश्व का पाँचवाँ देश बना, जिसकी अपनी मुद्रा का विशिष्ट प्रतीक (₹) है जो अमेरिकी डॉलर ($), जापानी येन (¥), यूरो (€) और ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग (£) के बाद आया।

भारतीय रुपये के नोट

मूल्यवर्ग	पीछे की थीम / स्थल	आकार (मिमी में)
₹2 (पुराना, अब बहुत दुर्लभ)	आर्यभट्ट उपग्रह	107 × 63
₹5 (दुर्लभ, सीमित मात्रा में जारी)	ट्रैक्टर (ग्रामीण विकास)	117 × 63
₹10	कोणार्क सूर्य मंदिर (ओडिशा)	123 × 63
₹20	एलोरा गुफाएँ (महाराष्ट्र)	129 × 63
₹50	पत्थर के रथ सहित हम्पी (कर्नाटक)	135 × 66
₹100	रानी की वाव बावड़ी (गुजरात)	142 × 66
₹200	साँची स्तूप (मध्य प्रदेश)	146 × 66
₹500	लाल किला (दिल्ली)	150 × 66
₹2000 (2023 में चलन से हटाया गया, लेकिन वैध मुद्रा)	मंगलयान (मंगल ऑर्बिटर मिशन)	166 × 66

मुद्रास्फीति

- अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर वृद्धि को **मुद्रास्फीति** कहते है।
- यह मुद्रा के मूल्य में गिरावट और **क्रय शक्ति** में कमी का कारण बनती है।
- भारत में सर्वाधिक मुद्रास्फीति वर्ष **1974–75** में **25.2%** दर्ज की गई थी, जिसका मुख्य कारण पिछले वर्ष खरीफ फसलों की विफलता और कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि होना था।

मूल्य/मौद्रिक भ्रम: इरविंग फिशर के अनुसार, "मनी इल्यूजन" से तात्पर्य व्यक्तियों की उस प्रवृत्ति से है, जिसमें वे अपनी आय और संपत्ति को मात्रात्मक (मौद्रिक/नाममात्र) रूप में देखते है और मुद्रास्फीति के कारण उनकी वास्तविक क्रय शक्ति में आई गिरावट की अनदेखी करते हैं।

मुद्रास्फीति के कारण

1. **माँगप्रेरित कारण/माँगजनित मुद्रास्फीति:** जब **माँग, आपूर्ति से अधिक हो जाती है**, तब यह स्थिति उत्पन्न होती है। इसे सामान्यतः इस वाक्य से वर्णित किया जाता है: **"कम वस्तुओं के पीछे अधिक पैसा।"**

   मुख्य कारण:
   - ✓ मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि या ऋण विस्तार
   - ✓ सरकार के उच्च व्यय के कारण राजकोषीय घाटा
   - ✓ सब्सिडी बढ़ने से उपभोक्ता माँग में वृद्धि
   - ✓ निर्यात में वृद्धि के कारण घरेलू बाजार में वस्तुओं की उपलब्धता में कमी

2. **आपूर्ति-प्रेरित कारण या लागतजनित मुद्रास्फीति:** जब उत्पादन की लागत में वृद्धि के कारण वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं।

   मुख्य कारण:

   - ✓ मजदूरी और वेतन में वृद्धि
   - ✓ ईंधन, बिजली और कच्चे माल की लागत में वृद्धि
   - ✓ सूखा, बाढ़, युद्ध या महामारी के कारण आपूर्ति में बाधाएँ
   - ✓ आयातित मुद्रास्फीति – विशेषकर **कच्चे तेल** जैसी आयातित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण

3. **संरचनात्मक कारण**: वे दीर्घकालिक बाधाएँ जो अर्थव्यवस्था में आपूर्ति को सीमित करती हैं।

   मुख्य कारण:

   - ✓ अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, जिसमें परिवहन, भंडारण और सिंचाई शामिल हैं।
   - ✓ कृषि आपूर्ति में कठोरता, जिसके कारण माँग बढ़ने पर प्रतिक्रिया धीमी होती है।
   - ✓ मानसून पर अत्यधिक निर्भरता, जिससे खाद्य आपूर्ति में उतार-चढाव आते है।

4. **नीति-संबंधी कारण:** सरकार या केंद्रीय बैंक की वे नीतियाँ जो अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रास्फीति में योगदान करती है।

   मुख्य कारण:

   - ✓ **राजकोषीय नीति:** अत्यधिक बजटीय घाटे जिन्हें उधारी या नई मुद्रा छापकर पूरा किया जाता है।
   - ✓ **मौद्रिक नीति:** विस्तारित मौद्रिक नीति जिसमें ब्याज दरें कम रखी जाती हैं।
   - ✓ **प्रशासित मूल्य निर्धारण:** न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) या ऊर्जा शुल्क में वृद्धि।

कीन्स के अनुसार: "वास्तविक मुद्रास्फीति केवल तब शुरू होती है जब अर्थव्यवस्था पूर्ण-रोज़गार स्तर पर पहुँच जाती है।"

मुद्रास्फीति के प्रकार

1. **रेंगती (मामूली) मुद्रास्फीति**: यह वह स्थिति है जब कीमतों में धीरे-धीरे वृद्धि होती है जो सामान्यतः प्रति वर्ष 3% तक होती है।
2. **चलती मुद्रास्फीति**: इसमें कीमतें मध्यम गति से बढ़ती है जो आमतौर पर प्रति वर्ष 3% से 6% तक और कुछ मामलों में 10% तक भी हो सकती हैं।
3. **दौड़ती मुद्रास्फीति**: इस स्थिति में कीमतें तेज़ी से बढ़ती है जिनकी वृद्धि दर प्रति वर्ष लगभग 10% से 20% के बीच होती है।
4. **कूदती/गैलोपिंग मुद्रास्फीति**: इसमें कीमतों में बहुत तेज़ वृद्धि होती है जो आमतौर पर दोहरे या तिहरे अंकों में होती है जो 20% से 100% तक हो सकती है। **उदाहरण**: जर्मनी (1920 का दशक), ज़िम्बाब्वे (2008)।
5. **अत्यधिक/उच्च मुद्रास्फीति**: यह वह स्थिति है जब कीमतें अत्यंत तेज़ी से बढ़ती हैं, सामान्यतः तीन अंकों से अधिक दर पर। इस दौरान मुद्रा का मूल्य लगभग समाप्त हो जाता है।
6. **खुली मुद्रास्फीति**: यह तब होती है जब कीमतों में वृद्धि किसी भी प्रकार के सरकारी नियंत्रण या प्रतिबंध के बिना होती है।

संबंधित अवधारणाएँ

- ➢ **अपस्फीति औए अवस्फीति:** दोनों का तात्पर्य मूल्य स्तर में गिरावट से है लेकिन इनमें अंतर होता है-
  - ✓ **अवस्फीति:** इसमें कीमतें अभी भी बढ़ रही होती है लेकिन बढ़ने की दर कम हो जाती है। जैसे- मुद्रास्फीति दर का 6% से घटकर 4% हो जाना।
  - ✓ **अपस्फीति:** जब मुद्रास्फीति दर 2% से नीचे गिर जाती है और समग्र रूप से कीमतों में गिरावट आती है।
- ➢ **रिफ्लेशन/ पुनःमुद्रास्फीति :** मुद्रा और ऋण की आपूर्ति बढ़ाकर कीमतों को जानबूझकर ऊपर लाने का प्रयास। यह आमतौर पर मंदी के बाद आर्थिक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने के लिए किया जाता है।
- ➢ **स्टैगफ्लेशन:** वह स्थिति जिसमें उच्च मुद्रास्फीति के साथ-साथ उच्च बेरोज़गारी और आर्थिक ठहराव मौजूद होता है। यह नीति-निर्माताओं के लिए एक कठिन चुनौती होती है।

- **हेडलाइन मुद्रास्फीति:** यह कुल मुद्रास्फीति को मापती है जिसमें खाद्य और ईंधन कीमतें शामिल होती है। भारत में इसे **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक- संयुक्त (CPI-C)** के माध्यम से मापा जाता है।
- **कोर मुद्रास्फीति:** भारत में इसे वर्ष **2000–01** में शुरू किया गया था। इसमें हेडलाइन मुद्रास्फीति से **खाद्य और ईंधन** को हटा दिया जाता है और मुख्य रूप से **गैर-खाद्य विनिर्मित वस्तुओं** पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

भारत में मुद्रास्फीति लक्ष्य: भारतीय रिज़र्व बैंक ने मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% ± 2% निर्धारित किया है, अर्थात् मुद्रास्फीति दर 2% से 6% के बीच होनी चाहिए।

मुद्रास्फीति का मापन

थोक मूल्य सूचकांक (WPI)

- **प्रथम प्रकाशन:** जनवरी, 1924
- **जारीकर्ता संस्था:** आर्थिक सलाहकार कार्यालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय
- **आवृत्ति:** मासिक रूप से जारी (पहले साप्ताहिक होती थी)
- **आधार वर्ष:** 2011–12
- **संबंधित समिति:** सौमित्र चौधरी समिति
- यह चयनित वस्तुओं के समूह की कीमतों में थोक स्तर पर परिवर्तन को मापता है।

मुख्य समूह	भारांश (%)
प्राथमिक वस्तुएँ	22.62%
ईंधन और ऊर्जा	13.15%
विनिर्मित वस्तुएँ	64.23%

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)

- **प्रतिपादक:** ए. डब्ल्यू. फिलिप्स
- **औद्योगिक श्रमिकों के लिए (CPI-IW):** आधार वर्ष: 2016; जारीकर्ता: श्रम ब्यूरो ; **उपयोग:** महँगाई भत्ता (DA) निर्धारित करने हेतु।
- **कृषि श्रमिकों के लिए (CPI-AL):** आधार वर्ष: 1986–87; जारीकर्ता: श्रम ब्यूरो
- **ग्रामीण श्रमिकों के लिए (CPI-RL):** आधार वर्ष: 1986–87; जारीकर्ता: श्रम ब्यूरो।

मुद्रा अवमूल्यन

- किसी केन्द्रीय संस्थान या सरकार द्वारा जानबूझकर अन्य मुद्राओं के सापेक्ष देश की मुद्रा का मूल्य कम करना।
- इसका प्रभाव केवल **बाहरी विनिमय दर** पर होता है, देश के भीतर वस्तुओं और सेवाओं की **आंतरिक क्रय शक्ति** पर नहीं।

मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उपाय

राजकोषीय उपाय (सरकार द्वारा)

- अप्रत्यक्ष करों में कमी
- प्रत्यक्ष करों में वृद्धि
- सार्वजनिक व्यय में कमी
- अधिक उत्पादन को प्रोत्साहन

मौद्रिक उपाय (भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा)

- मुद्रा आपूर्ति में कमी
- बैंक दर, रेपो दर और नकद आरक्षित अनुपात (CRR) में वृद्धि, ताकि ऋण सृजन को नियंत्रित किया जा सके।

अपस्फीति /मुद्रासंकुचन को नियंत्रित करने के उपाय

राजकोषीय उपाय

- सार्वजनिक व्यय में वृद्धि
- करों में कमीs
- सार्वजनिक ऋण का पुनर्भुगतान

मौद्रिक उपाय

- मुद्रा आपूर्ति का विस्तार
- सस्ती (विस्तारवादी) मौद्रिक नीति को अपनाना

सिग्नियोरेज: मुद्रा जारी करने पर सरकार को प्राप्त राजस्व/लाभ सिग्नियोरेज कहलाता है क्योंकि इसके अंकित मूल्य और इसे छापने की लागत में अंतर होता है। अत्यधिक मात्रा में मुद्रा छापना अत्यधिक मुद्रास्फीति का कारण बन सकता है।